मेरे गीत है तेरे लिये

(संगीतकार स्व. मदन मोहन द्वारा संगीतबद्ध समस्त फ़िल्मी गीतों का संग्रह)

संग्रहकर्ता:

गुलशन पामर

एम.ए. (इतिहास), बी.ए (ऑनर्ज़)

संचालक : पामर लायब्रेरी, आज़ाद भवन, मुक्तसर (पंजाब) 152026

प्रकाशक :

गुलशन पामर एम.ए.

आज़ाद भवन, मुक्तसर(पंजाब) 152026

फोन: कार्यालय 01633/60113, निवास- 60452

बिक्री के लिये यह पुस्तक केवल प्रकाशक के पास उपलब्ध है।

मूल्य: 30/- (पेपर बैक)

कुल प्रतियां : 500

भूमिका

- गुरबचन सिंह (सचिव)
संगीतकार मदन मोहन यादगार सभा, जालन्धर

संगीत-जगत में सदैव यह कमी रही है कि भारतीय संगीत की तरफ पूरा ध्यान नही दिया गया जिसका नतीजा यह हुआ कि पश्चिमी संगीत भारत की युवा पीढ़ी के दिलों में घर करने लगा और उनके सिर चढ़कर बोलने लगा है। पहले व पुराने संगीतकार जिस तरह संगीत पर मेहनत करते थे, उसी तरह अगर आज के संगीतकार भारतीय संगीत तथा साजों को तरजीह देते हुये मेहनत करें तो ऐसी कोई बात नही कि आज की युवा पीढ़ी अपने देश के संगीत को न समझे। अच्छे संगीत, गीत व सुर का सुमेल हो तो आज का नौजवान उसे अवश्य अपनायेगा।

भारतीय संगीत और फिल्मों की जरा सी भी जानकारी रखने वाला व्यक्ति संगीतकार नौशाद के नाम से अवश्य परिचित होगा। उन्होंने फिल्मी संगीत को बेहतरीन धुने दी। एक दिन नौशाद साहब किसी दूसरे संगीतकार के पास जाकर कहने लगे- " अगर आप अपनी एक धुन मेरे नाम कर दें तो बदले में मै अपना सारा संगीत आपके नाम करने को तैयार हूं। " किन सुन्दर शब्दों में नौशाद साहब ने उस संगीतकार को सराहा। वह धुन थी लता मंगेश्कर के गाये गीत की- "आपकी नजरों ने समझा प्यार के काबिल मुझे। " और उस लाजवाब तथा काबिले-तारीफ धुन के मालिक थे स्व. मदन मोहन जिन्हें हमसे बिछुड़े हुये भी 24 वर्ष हो चुके है मगर आज भी 'गजलों का बादशाह' का खिताब उनके नाम पर ही है।

स्व. मदन मोहन के जीवन की एक घटना याद आती है। राग भीम प्लासी में फिल्म 'मेरा साया' के गीत- 'नैनों में बदरा छाये' की रिकार्डिंग चल रही थी कि मदन जी ने महसूस किया कि कुछ साजिन्दे अपना साज ठीक नही बजा रहे । वह एकदम गुस्से में आ गये ओर साजिन्दों पर चिल्लाये- 'साज बेसुरा बजाते हो, सुर के साथ बेईमानी करते हो शर्म नही आती?' कुछ समय तक माहौल में तनाव बना रहा। लता जी के कहने पर माहौल खुशगवार हुआ तथा गीत की रिकार्डिंग पूरी हुई। यह थी स्व. मदन मोहन की संगीत के प्रति ईमानदारी, लगन व मेहनत । गजलों के इस बादशाह को शास्त्रीय संगीत की भी पूरी समझ थी। उनकी तैयार की हुई गजलें आज भी लोग बहुत ध्यान व प्यार से सुनते है और सुनते रहेंगे ।

'संगीतकार मदन मोहन यादगार सभा' (जालंधर) का एक मुख्य उद्देश्य यह भी है कि स्व. मदन मोहन के संगीत

को सदैव अमर रखा जाये। किसी भी अच्छी संगीत रचना के लिये धुन, शब्दों व सुर का बहुत गहरा सम्बन्ध होता है। यह कहा जा सकता है कि अगर मदन मोहन न होते तो शायद गीतकार राजेन्द्र कृष्ण, मजरूह सुलतानपुरी, हसरत जयपुरी, राजा मेंहदी अली खां तथा कैफी आजमी की आज जो पहचान है वह न होती। उनके गीत लोगों की जुबान पर न होते। लता, आशा, रफी, गीतादत्त, तलत महमूद व मन्ना डे ने इन गीतकारों के शब्दों तथा मदन मोहन की धुनों को अपने सुरों द्वारा आकाश की बुलन्दियां दीं- आप यह भी कह सकते है कि अगर इन सभी गायकों का साथ मदन जी को ना मिलता तो वह आज गजलों के बादशाह न होकर एक साधारण संगीतकार ही होते। मदन जी एकमात्र ऐसे संगीतकार थे जिन्होने अपने संगीत में कभी भी विदेशी साजों का प्रयोग नही किया।

आज भारतीय फिल्म संगीत विदेशी संगीत के प्रभाव में आकर जिस कदर पतन की ओर गया है व जा रहा है वह बहुत ही दु:खदायी है। ऐसे में बहुत जरूरी हो गया है कि मदन मोहन जी जैसे संगीतकारों की याद को जीवन्त बनाये रखा जाये। खुशी की बात है कि कुछ संस्थायें तथा व्यक्ति इस दिशा में आगे आयें है। फिर भी इस ओर बहुत ध्यान दिया जाना चाहिये।

गुलशन पामर (मुक्तसर) के प्रस्तुत गीत कोश **'मेरे गीत है तेरे लिये'** को मै स्व. मदन मोहन की फिल्मों व गीतों का 'इन साईक्लोपीडिया' मानता हूं। पंजाब के एक छोटे से कस्बे में रहते हुये उन्होने इस कोश के लिये जो मेहनत की है वह बहुत ही सराहनीय है। मदन मोहन के 1950 से 1975 तक के संगीतमय जीवन काल की 92 फिल्मों के सभी गीतों का संकलन करना कोई आसान काम नही, मगर फिर भी पामर जी ने इसे खूबसूरती व लगन से अंजाम दिया है। यह किताब आपको स्व. मदन मोहन जी की फिल्मों के नाम, गीत, गीतकार व गायकों के नामों के साथ-2 यह जानकारी भी देगी कि कौन सी फिल्म किस सन् में रिलीज हुई थी। इस सब पर की गई मेहनत का कोई मोल नही है। मुझे आशा ही नही पूरा विश्वास है कि गुलशन पामर की यह किताब संगीत प्रेमियों के लिये एक अनमोल तोहफा होगी। बधाई व शुभ-कामनायें। (आज पामर का जन्म दिन भी है)

गुरबचन सिंह

460-L माडल टाऊन, जालन्धर-3

फोन : 275033

दिनांक-1.7.99

स्व. मदन मोहन की समस्त फिल्मों की सूची (हिन्दी वर्णमाला में)

1. अकेली मत जइयो(63)
2. अदा (51)
3. अदालत (58)
4. अनपढ़ (62)
5. असलियत (74)
6. अहसान (54)
7. अंजाम (52)
8. आखरी दाव (58)
9. आपकी परछाइयां (64)
10. आशियाना (52)
11. आंखें (50)
12. इंस्पैक्टर ईगल(78)
13. इल्जाम (54)
14. एक कली मुस्काई (68)
15. एक मुट्ठी आसमान (73)
16. एक शोला (58)
17. कोशिश (72)
18. खजानची (58)
19. खूबसूरत (52)
20. खोटा पैसा (58)
21. गजल(64)
22. गेट वे आफ इंडिया (57)
23. घर का चिराग (67)
24. चंदन (58)
25. चाचा चौधरी (53)
26. चाचा जिंदाबाद (59)
27. चालबाज(मीसा) (80)
28. चिराग (69)
29. चौंकीदार (74)
30. छोटे बाबू (57)
31. जब याद किसी की आती है (67)
32. जलन (78)
33. जहांआरा (64)
34. जागीर (59)
35. जेलर (58)
36. डाकघर (66)
37. दस्तक (70)
38. दिल की राहें (73)
39. दुनिया न माने (59)
40. दुल्हन एक रात की (66)
41. देख कबीरा रोया (57)
42. धुन (53)
43. नया आदमी (56)
44. नया कानून (65)
45. नवाब सिराजुद्दौला (67)
46. नाईट क्लब (58)
47. निर्मोही (52)
48. नीला आकाश (65)
49. नींद हमारी खाब तुम्हारे (66)
50. नौनिहाल (67)
51. परवाना (71)
52. प्रभात (73)
53. पाकेटमार (56)
54. पूजा के फूल (64)
55. फिफ्टी-2 (56)
56. बम्बे रेस कोर्स (65)
57. बहाना (60)
58. बागी (53)
59. बाप बेटे (59)
60. बावर्ची (72)
61. बेटी (57)
62. बैंक मैनेजर (59)
63. भाई भाई (56)
64. मदहोश (57)
65. मनमोजी (62)
66. मस्ताना (54)
67. महाराजा (70)
68. मिनिस्टर (59)
69. मां का आंचल (70)
70. मेम साहब (56)
71. मेरा साया (66)
72. मोहर (59)
73. मोसम (75)
74. रिश्ते नाते (65)
75. रेलवे प्लेटफार्म (55)
76. लड़का लड़की (66)
77. लैला मजनूं (76)
78. वो कौन थी (64)
79. शबिस्तान (57)
80. शरफत छोड़ दी मैंने (76)
81. शराबी (64)
82. शेरू (57)
83. संजोग (61)
84. समुन्दर (57)
85. साहब बहादुर (77)
86. सुल्ताना डाकू (72)
87. सुहागन (64)
88. सेनापति (61)
89. हकीकत (64)
90. हंसते जख्म (73)
91. हिन्दुस्तान की कसम (73)
92. हीर रांझा (70)

नोट- मदन मोहन के देहांत के कारण फिल्म " लैला मंजनू "के बाकी गीतों का संगीत स्व. जयदेव ने तैयार किया था।